7. युवा नागरकि का ब्लूप्रटि

हमारे साझे घर की कहानी

बारशि में फुसफुसाता पुल

शामली, काली नदी और सच्चे पत्थरों का रहस्य

भारत के युवा रक्षकों के लिए लखिति

बच्चों और अभभिावकों के साथ मलिकर पढने हेतु सचत्रि पुस्तक

1. काली नदी की फुसफुसाहट

काव्या आठ साल की थी और शामली गाँव में रहती थी, जहाँ की सड़कें लाल मिट्टी की बनी थीं और सुबह की हवा में गीली मिट्टी और पिसी हुई सरसों की सुगंध आती थी। पूरी दुनिया में उसकी सबसे पसंदीदा चीज़ उसकी नीली लाइनों वाली छोटी नोटबुक थी। वह उसे अपने चमकीले पीले रेनकोट की जेब में एक नन्ही सी पेंसिल के साथ हमेशा संभालकर रखती थी, जिसे उसने दोनों तरफ से छील रखा था।

हर दोपहर स्कूल के बाद, काव्या नदी की ओर देखने वाले विशाल, प्राचीन बरगद के पेड़ की लटकती जड़ों पर बैठ जाती थी। नदी का नाम काली था, और उसके दादाजी (दादू) उसे 'महान निरीक्षक' (The Great Inspector) कहते थे।

"देखो काव्या, इंसान अपनी सड़कें बनाते हैं, अपने कानून लिखते हैं और कागजों पर सरकारी वादे छापते हैं। लेकिन नदी के पास हमारे काम को जाँचने का एक अलग ही तरीका है। भीषण गर्मी में वह शांत और धैर्यवान रहती है। लेकिन जब बारिश होती है, तो वह जाग उठती है। वह कभी झूठ स्वीकार नहीं करती।"

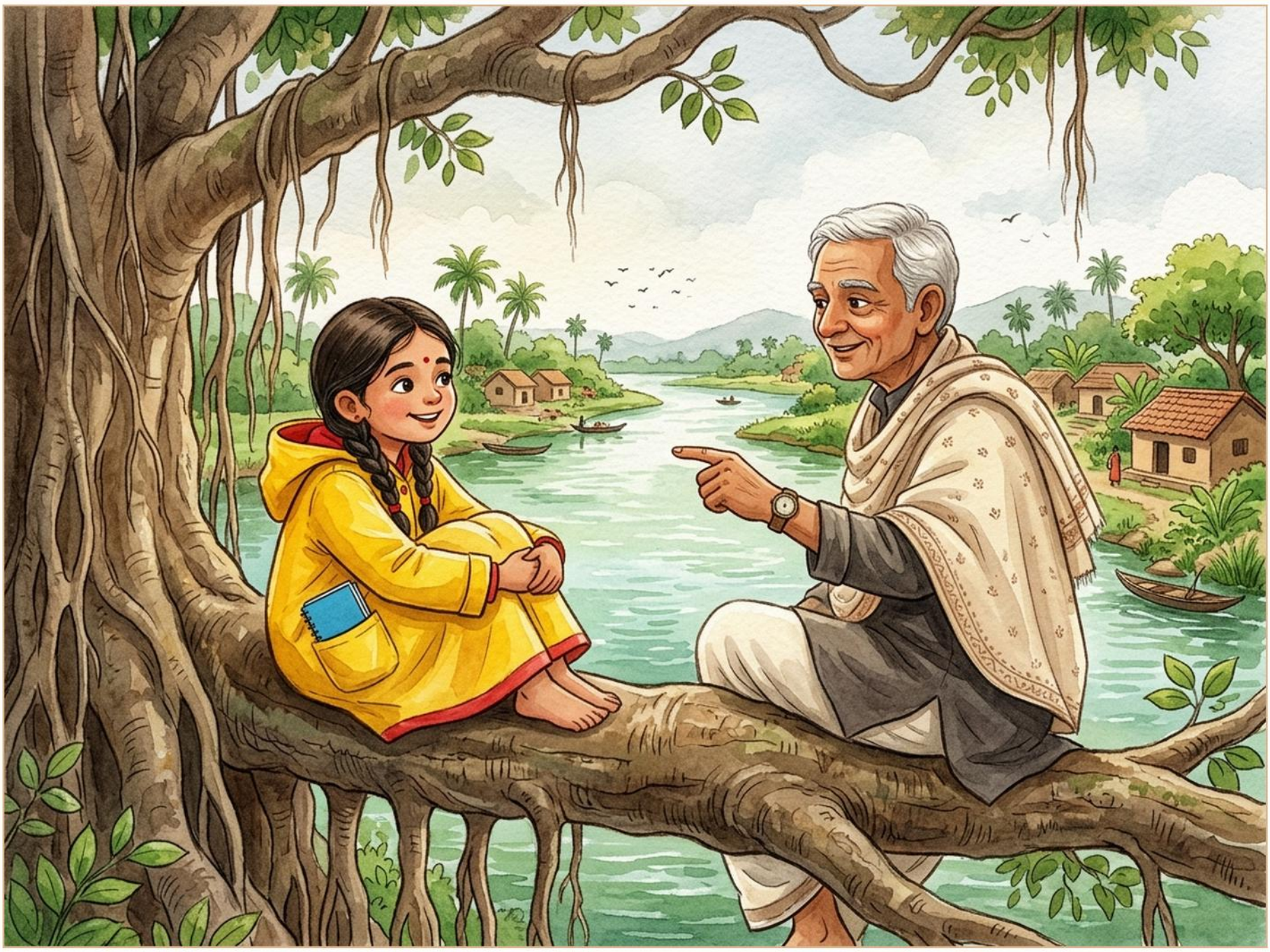

2. चमकीली हैट वाला आदमी

बसंत की शुरुआत की एक सुहानी सुबह, शामली की शांत हवा में अचानक एक भयंकर गर्जना गूँज उठी। विशाल, पीले रंग की मशीनें अपने काले दाँतों वाले पंजों के साथ घाटी में आ पहुँचीं, जो लाल मिट्टी को उखाड़ रही थीं और धुएँ के बादल उड़ा रही थीं। वे दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे बना रहे थे।

उन गड़गड़ाती मशीनों के साथ श्री लोह (Mr. Loh) नाम का एक लंबा आदमी आया। उसने एक चमकीली सफेद हैट पहनी थी जो बहुत ही साफ थी, और हाथ में एक चमकता हुआ काँच का टैबलेट था।

'हम एक भव्य पुल बना रहे हैं!' श्री लोह ने मेगाफोन से घोषणा की। 'यह विशेष जल्दी सूखने वाले कंक्रीट से बनेगा और सिर्फ नब्बे दिनों में पूरा हो जाएगा!'

> **"आधुनिक विज्ञान, नन्ही लड़की! जल्दी सूखने वाले कंक्रीट को पुरानी धीमी गहराई तक खुदाई की जरूरत नहीं होती। समय ही पैसा है, और हमें काम बहुत जल्दी पूरा करना है!"**

3. पुराने पत्थर का रहस्य

उस शाम, जब घाटी में सन्नाटा छा गया, काव्या चुपके से नदी के किनारे गई। उसने सूखे कंक्रीट के एक ढीले टुकड़े को उठाया और उंगलियों के बीच रगड़ा। वह नदी के पत्थर जैसा मजबूत नहीं था; इसके बजाय, वह तुरंत सूखी रेत की तरह बिखर गया।

उसने नीली नोटबुक में लिखा: 'श्री लोह का कंक्रीट एक सूखी बिस्कुट की तरह टूट रहा है।'

घर लौटकर, उसने तेल के दीये की रोशनी में दादू को अपनी बात दिखाई। दादू ने ६० साल पुराने पुल का बसाल्ट पत्थर निकाला: 'पुराने गाँव वालों ने इन्हें पहाड़ियों से इकट्ठा किया था। उन्होंने चूने और गुड़ से जोड़ा। नदी ने इन्हें स्वीकार किया क्योंकि वे सच्चे और धैर्यवान पत्थर थे।'

> **"श्री लोह का कंक्रीट ज्यादातर सस्ती रेत और पानी है। आसमान अपनी जाँच की तैयारी कर रहा है, मेरी बच्ची। बहुत जल्द कंक्रीट को सच बोलना ही पड़ेगा।"**

4. आसमान का ऑडिट

गर्मी के मध्य में काले बादल छा गए। मूसलाधार बारिश शुरू हो गई—मानसून आ चुका था। बारिश ने श्री लोहे के रंग-बिरंगे ब्रोशर नहीं पढ़े थे। उसने टैबलेट के नंबरों की परवाह नहीं की। वह बस सलेटी चादरों की तरह बरसती रही।

काली नदी एक गहरी गर्जना के साथ जाग उठी। वह उफान मारती हुई विशाल अंबर नदी बन गई, और उसकी शक्तिशाली लहरें नए एक्सप्रेसवे पुल के कंक्रीट के खंभों से टकराने लगीं।

काव्या अपने पीले रेनकोट में चिल्लाई: 'नदी बहुत तेज गरज रही है, दादू! ऐसा लगता है जैसे वह गुस्से में है!'

"वह गुस्से में नहीं है, काव्या। वह बस अपना सालाना ऑडिट (वार्षिक निरीक्षण) कर रही है। वह पुल से वही एक सवाल पूछ रही है: 'तुम सच में किस चीज़ से बने हो?'"

5. कंक्रीट सच बताता है

तीन दनिों की लगातार बारशि के बाद, आखरिकार सूरज नकिला। ग्रामीण नए एक्सप्रेसवे की जाँच करने बाहर नकिले।

एक्सप्रेसवे की नई लकि रोड पूरी तरह ढह चुकी थी, जसिसे बडा गड्ढा बन गया था। और श्री लोह का भव्य पुल? उसके बीच में एक बडी, गहरी दरार पड गई थी और उसके दो खंभे कीचड में धँसकर तरिछे हो गए थे।

लेकनि कुछ ही दूरी पर, गाँव वालों का बनाया पुराना पत्थरों का पुल बलि्कुल शांत और सुरक्षति खडा था। प्राचीन पत्थर फुसफुसा रहे थे: 'हम अभी भी यहीं हैं। हमने झूठ नहीं बोला था।'

श्री लोह गायब हो चुके थे, पीछे छूट गए थे तो बस कीचड में गाडी के गहरे नशिान।

> **"पुराना पत्थर का पुल सीना ताने खडा रहा, जबकि नया कंक्रीट का पुल पहली ही मूसलाधार बारशि में धँसकर बखिर गया।"**

6. नदी की रपिोर्ट

दादू और काव्या टूटे हुए एक्सप्रेसवे के कनिारे चल रहे थे। काव्या को कीचड में दबा एक भीगा कागज़ मलिा। यह ठेकेदार के दफ्तर का आंतरकि ज्ञापन (Internal Memo) था।

उसमें लखिा था: 'चेतावनी—कंक्रीट मश्रिण में असामान्य कंपन पाए गए हैं। नींव को तुरंत मजबूत करने की आवश्यकता है। समय सीमा पर पुल खोलने के लिए सफिारशि को नजरअंदाज कयिा गया।'

'दादू देखो!' काव्या बोली। 'उन्हें पहले से पता था! रपिोर्ट में लखिा था कि पुल कमजोर है, लेकनि उन्होंने इसे अँधेरे दराज में छपिा दयिा!'

> **"कागजी रपिोर्ट को दराज में छपिाया जा सकता है, लेकनि एक पुल नदी से अपना सच नहीं छपिा सकता। पानी हमेशा दरार को ढूँढ लेता है। आओ, हम अपनी बही में दर्ज करें।"**

काव्या ने दादू की बही के आंकडों को देखा। 'दादू,' उसने पूछा, 'हम ऐसा घर कैसे बनाएँ जो कभी न गरि? हम अपने देश की रक्षा कैसे करें?'

दादू मुस्कुराए। उन्होंने काव्या की छलिी हुई पेंसलि उसकी हथेली पर रखी। 'हम खुद ऑडटिर बनते हैं, काव्या। जब वे सड़क बनाते हैं, तो हम योजना देखने की माँग करते हैं। जब वे कहते हैं कि पुल बन गया, तो हम देखते हैं कि वह बारशि में कैसे टकिता है। और जब रकिॉर्ड छपिाए जाते हैं, तो हम सवाल पूछते हैं: हमारा साझा पैसा कहाँ गया?'

"एक देश पत्थरों और कंक्रीट से बनता है, लेकनि वह सच्चाई से खड़ा रहता है। और सच पर उसी का अधकिार है जो सवाल पूछने की हम्मित रखता है।"

युवा नागरकि की प्रतज्ञि्ा (THE YOUNG CITIZEN'S PLEDGE)

१. मैं अपनी आँखें खुली रखूँगा/रखूँगी: मैं अपने पड़ोस की सड़कों, पुलों और पार्कों पर ध्यान दूँगा।

२. मैं 'तो क्या?' सवाल पूछूँगा/पूछूँगी: जब नई परयिोजना बनेगी, तो मैं पूछूँगा कि क्या यह टकिाऊ बनी है।

३. मैं तथ्यों की खोज करूँगा/करूँगी: हमारा सार्वजनकि धन हम सबका है, और हमें जानने का अधकिार है।

४. मैं सच्चाई लखिूँगा/लखिूँगी: काव्या की तरह, मैं अपनी नोटबुक रखूँगा और देश के वादों का हसिाब रखूँगा।